सुखाएल पोखरिक जाइठ

गीत संग्रह

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

दाम : १०० रू. मात्र
पहिल संस्करण : २०१३

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी
मिथिला, बिहार
पिन- ८४७४१०
मोबाइल- ९९३१६५४७४२

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष- (०११) २५८८९६५६-५७ फैक्स- (०११) २५८८९६५८
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Akhilesh Mandal.

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो- 09572450405, 09931654742

SUKHAYAL POKHRIK JAITH : Anthology of Maithili Song by Jagdish Prasad Mandal.



परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३ ई.मे) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३ ई.मे) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३ ई.मे)

विहनि कथा संग्रह : (१) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह। पहिल संस्करण-२०१० तथा दोसर २०१३), (२) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३ ई.मे)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३ ई.मे)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३ ई.मे)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३ ई.मे)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३ ई.मे)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...

एकसत्तरि-

१. केकरो फूल
२. काज पसरि...
३. धार बीच...
४. फेरो हम...
५. रंगिते काजक...
६. चोरकट चालि...
७. डूमा-डुमी...
८. छाती चढ़ि...
९. ससुरामे...
१०. जिनगीक ताक...
११. गोर मुँह.....
१२. कतरा आम...
१३. सूखल पोखरिक...
१४. श्रोता कहि...
१५. जड़ि जंजालक...
१६. उगिते लाज...
१७. ओन्हा चालि...
१८. गिरैत घर...
१९. अना गाहिंस...
२०. सूखल पोखरिक...
२१. लत्ती जेना...
२२. पानि माटि...
२३. गोहि बनि...
२४. जेहन जे...
२५. चेत चेता...
२६. अन्हर जाल...
२७. डायरीक....

१. केकरो फूल...

केकरो फूल मौँछ बनै छै
तँ केकरो फूलहरि जाइ छै।
फुलैक फूल फुलिया-फलिया
हस-हँसि दुनू दिस बढ़ै छै।
हस-हँसि दुनू दिस बढ़ै छै।
केकरो...।

फड़ैक सरूप पकैड़-पकैड़
मौँछ फूल सजबैत कहै छै।
सीख-लीख सिरखार गढ़ि-गढ़ि
फल-फलाफल सरूप धड़ै छै।
फल-फलाफल सरूप धड़ै छै।
केकरो...।

तेतबे नइ यौ भाय साहैब,
केकरो फूल अलोपित भऽ भऽ
सत-सत हाथी ताकि थकै छै।
फूल गजनती गज-गज गजुआ
बाट-बटोही हारि थकै छै।
बाट-बटोही हारि थकै छै।
केकरो...।

जेकर दूध छाल छलही बनि
आनि जम जजमान गढ़ै छै।
बाल-बोध मुँह अमृत बनि
अरोग जीत जिनगी पबै छै।
अरोग जीत जिनगी पबै छै।
केकरो...।

२. काज पसरि...

काज पसरि अबिते अंगना
लप-लप लछमी आबए लगै छै।
लछ-लछ लछमी कुदैक-कुदैक
शर सिर कमल सजबए लगै छै।
शर सिर कमल सजबए लगै छै।
काज पसरि...।

सजि-सजि सजिते सिर श्रृंगार
बाणी वीणा आबए लगै छै।
बाणी तनि भरैन-पुरैन
काशी कमल खिलबए लगै छै।
काशी कमल खिलबए लगै छै।
काज पसरि...।

कूदि-कूदि काज कर करिआ
वृक्ष सरूप सजबए लगै छै।
अशोभ शोभ अलिसाइत अलि
प्रसून रस रसबए लगै छै।
प्रसून रस रसबए लगै छै।
काज पसरि...।

सरसिज कमल सरि-सेरिआ
सागर कमल गढ़ए लगै छै।
सगर पहाड़ पार पे-पेबि
गर गल जोड़ि मिलए लगै छै।
गर गल जोड़ि मिलए लगै छै।
काज पसरि...।

३. धार बीच...

बलधकेल धकिया-धकिया
धार बीच उगै-डुमै छै।
सुभर जिनगीक कथ कथे की
पतरखेप खेपैत खपै छै।
पतरखेप खपैत खपै छै।
धार बीच...।

करिते उग-डूम धार मध
पगे-पग पएर पिछड़ै छै।
पात-निपात पतड़-पतड़ा
पतरखेब खेबैत रहै छै।
पतरखेब खेबैत रहै छै।
धार बीच...।

पगेपन पन-पन पंतिया
पंतिया पतिया पन चढ़ै छै।
बलपन खेलपन कुदि कुदैक
पतरखेल खेलैत कहै छै।
पतरखेल खेलैत कहै छै।

जएह जिनगी सएह किरदानी
सभ दिन सभ बाजि कहै छै।
धरम-अधरम कुधरम बूध-रम
पतरहाँसि हँस-हँसैत कहै छै।
पतरहँसि हँस-हँसैत कहै छै।
धार बीच...।

४. फेरो हम...

मरि-मरि कऽ मरै छी
फेरो हम फड़-फड़ जीबै छी।
फेरो हम फड़-फड़ जीबै छी।

झूठ-फुस एक्कोटा नै
मुँह फोड़ि-फोड़ि कहै छी
कखनो ठोर बर-बरी बना
दालि सिर चढ़ि-चढ़ि कहै छी
दालि सिर चाढ़ि-चाढ़ि कहै छी।
फेरो हम...।

कखनो रम रमनाक बीच
महाभारत रचि-रचि कहै छै।
दुनूक श्रृगी-श्रृंग चढ़-चढ़ि
दोहरा-दोहरा कहै छी
फेरो हम जीबै छी
मरि-मरि कऽ मरै छी
फेरो हम...।

रस-रसा रसाएल जेना
रब-रब रभसि कहै छी।
रभसी रभसि रम-रमा
मरा राम मरा कहै छै।
फेरो हम जीबै छी
फेरो हम...।

५. रंगिते काजक...

रंगिते काजक रंगसँ
रंग जिनगी बदलए लगै छै।
धड़-धरती छोड़िते जेना
नवरंग जिनगी धड़ए लगै छै।
नवरंग जिनगी धड़ए लगै छै।

रूप अरूप सरूप गढ़ि-गढ़ि
रंग रंगि रभसए लगै छै।
मुँह-कान जेहेन-जेहेन
नाओं अपन सिरजए लगै छै।
रंगिते काजक...।

अपना-अपनी गमक-महक
संग रूप सिरजए लगै छै।
गमक गंन्हि महक-महकि
धरती-अकास पसरए लगै छै।
धरती-अकास पसरए लगै छै।
रंगिते काजक...।

पता-पती पसरि-पसरि
जिनगीक राग भरमए लगै छै।
अपन-अपन जिनगीक किरदानी
शूर गलगल गबए लगै छै।
शूर गलगल गबए लगै छै।
रंगिते काजक...।

६. चोरकट चालि...

चोरकट चालि पकड़ि-पकड़ि
चोरकट चालि चलैत रहै छी
बाल देखि बोली बिलहि
चोरकट समाज गढ़ैत रहै छी।
चोरकट समाज गढ़ैत रहै छी।
चोरकट चालि...।

एकी-दूकी गंजक-गंज
चीरक समाज बनबैत रहै छी।
साज सजि सजनी सन्हिया
चढ़ि-चढ़ि सिर सजैत रहै छी
चढ़ि-चढ़ि सिर सजैत रहै छी
चोरकट चालि...।

अड़कि-मड़कि धड़कि जन-जन
सरकि-हरकि धरैत रहै छी
मुसर मूस मुसिया-मुसिया
कट-कट, कटि-कटि कहैत रहै छी।
कट-कट, कटि-कटि कहैत रहै छी।
चोरकट चालि...।

कटनी काटि कात कतिया
आँटी-अगो बनैत कहै छी
आँटी-बोझक आँट जेना
सीली-आगू हँसि-हँसि कहै छी।
सीली-आगू हँसि-हँसि कहै छी।
चोरकट चालि...।

७. डूमा-डुमी...

डूमा-डुमी खेल खेलि
धड़ा-धाम केना टपबै।
अन्हार घर साँपे-साँप
तखनि पार केना करबै?
तखनि पार केना करबै?

अन्हार डूमि-डूमि डुबैक
हँथोरि हाथ केना पेबै?
के केमहर दहलि भँसिया
बीच अन्हार केना देखबै?
बीच अन्हार केना देखबै?
डूमा-डुमी...।

सघन-समीर अकास ठेकि
नाद-शंख केना चढ़बै?
अकान कान कानि-कूहि
नाग-फाँस केना कटबै।
नाग-फाँस केना कटबै।
डूमा-डुमी...।

डँसिते छाती सू-सुरसुरा
मौगति हथिया धड़बै।
लूल हाथ लुलुआ-लुलुआ
हर-हर, हारि-हारि सुनेबै।
हर-हर, हारि-हारि सुनेबै।
डूमा-डुमी...।

८. छाती चढ़ि...

छाती चढ़ि मुकिया-मुकिया
कान पकड़ि पुछै छै।
संठी बोझ बना-बना
झील-झिलहोरि खेलै छै।
मीत यौ, झील-झिलहोरि...।

अपने ताले ताल पीटि
घैल-छाँछ भरैत कहै छै।
नीरा-पानि निरा-निरा
छछिया-छाँछ धड़ा कहै छै।
मीत यौ,
छछिया-छाँछ धड़ा कहै छै।
छाती चढ़ि...।

छह-छहा छहलि-छहलि
छाँछ-साँच बजैत कहै छै।
छाँछी छाँछ सुरकि-सुरकि
पक-पकौल माटि कहै छै।
मीत यौ,
पक-पकौल माटि कहै छै।
छाती चढ़ि...।

कुम्हारक किरदानी केहेन
कचिया-पकिया मिला गढ़ै छै।
कचिया घोड़ा रमि रेमंत
आउ, टिक, आउ-टिकटिकबै छै।
मीत यौ,
आउ, टिक, आउ-टिकटिकबै छै।
छाती चढ़ि...।

९. ससुरामे...

ससुरामे जा कऽ धीया
रहिहेँ चीत-चेत कऽ।
सूखि-दूखि बीच विचड़ि
चलिहेँ देखि-सूनि कऽ।
चलिहेँ देखि-सूनि कऽ।
चलिहेँ देखि-सूनि कऽ।

सून सुत्र पेब पकड़ि
चिन्तन चीत चेत कऽ
सुरता सुरत पेब पकड़ि
मरनी-मरम परेख कऽ
मरनी-मरम परेख कऽ
ससुरामे...।

माए-बाप सर-समाजक
लत-लत्ती लतड़ि कऽ
नव घर नव घरनी घेड़
मन-मन बपहर पेब कऽ
मन-मन बपहर पेब कऽ
ससुरामे...।

माए-बाप पीहर जेना
तहिना पीघर पेब कऽ
तहिना ने सरो-समाज
बेटी-पुतोहु बूझि कऽ
बेटी-पुतोहु बूझि कऽ
ससुरामे...।

१०. जिनगीक ताक...

जिनगीक ताक ताकैमे
जिनगीए लगा देलिऐ।
तैयो सबेर पाबैमे
गम-गम जान गमा देलिऐ।
गम-गम जान गमा देलिऐ।
जिनगीए...।

रेहे-रेह राह रहियाबे
राहे-राह सहजन देलिऐ।
तैयो बात-घाट घटि-घटि
घटिया घाट घटैत गेलिऐ।
घटिया घाट घटैत गेलिऐ।
जिनगीए...।

घटि-कुघटि मन सजि साजि
नचार-विचार सुनैत गेलिऐ।
समरथकँ दुख नाइ गोसाँइ
रतिया राति गबैत गेलिऐ।
रतिया राति गबैत गेलिऐ।
जिनगीए...।

समरथ जिनगीक अवस्था
समरथाइ कहबैत गेलिऐ।
बिनु सामरथे समर्थ बनि
रोग-वियाधि पबैत गेलिऐ।
रोग-वियाधि पबैत गेलिऐ।
जिनगीक ताक...।

११. गोर मुँह...

गोर मुँह मणि मन मुसुका
बूध जानि बुधजन कहैत एला
बाट-बटोही बटिया पकड़ि
बटगमनी स्वर भरैत एला।
बटगमनी स्वर भरैत एला।

देखि देखि, सून-सूना
खीस खीसिया खखसैत एला
सुखा डाहि सुखौत सुख
दुख दुखिया देखबैत गेला।
दुख दुखिया देखबैत गेला।
गोर मुँह...।

रूप पकड़ि सरूप गढ़ि-गढ़ि
सरूप रूप संगैत गेला
पतिया पात पतिया-पतिया
गोंति-गोंति मुँह गोंतैत गेला।
गोंति-गोंति मुँह गोंतैत गेला।
गोर मुँह...।

झोंका-झोंका झुका-झुका
झुकिया-झुकिया झुलैत गेला
मुँह गोरि मन मणि मुसुका
बूध जानि बुधजन कहैत एला।
बूध जानि बुधजन कहैत एला।
गोर मुँह...।

१२. कतरा आम...

कतरा आम की माइन नै?
तँए कि ओ आम नै भेलै।
रूप-रंग गुण सु-सुआद
अंश आम की नै भेलै?
अंश आम की नै भेलै?

पेब गुण जेना आम गुन-गुना
रसिया रस रसाइत गेलै।
तहिना अंशी अंश बनि-बनि
रसिक जन जगजगाइत गेलै।
रसिक जन जगजगाइत गेलै।
कतरा आम...।

अंश एक कटि बिरिछ जन
संग दोसर धड़ैत गेलै।
अंश-अंशी संगोर छोड़ि
जीव-जगत कहबैत गेलै।
जीव-जगत कहबैत गेलै।
कतरा आम... ।

अंशी अंश जग जन जगा
खेल संसार रचैत गेलै।
कियो खेलाड़ी खेल पकड़ि
अंशी-अंश मिलैत गेलै।
अंशी-अंश मिलैत गेलै।
कतरा आम...।

१३. सूखल पोखरिक...

सूखल पोखरिक जाठि जेना
जन-जिनगी सुखाइत गेलै।
एलै-गेलै ससैर ससरि
माने मन भोथाइत गेलै।
माने मन भोथाइत गेलै।

बरखा, रौदी बहि बाढ़ि
बले-बल बलुआइत गेलै।
जलधर धार धेने कहियो
जान मारि मटियाइत गेलै।
जान मारि मटियाइत गेलै।
सूखल पोखरिक...।

दशानन जहिना कहियो
धारे-धार धड़धड़ाइत गेलै।
धारे-धार जाने जान
संग मीलि जल-जलाइत गेलै।
संग मीलि जल-जलाइत गेलै।
सूखल पोखरिक...।

गमे-गम कमि कैम कमिया
कामे कम कमियाइत गेलै।
पेटे-पेट पटिया-पटिया
बाते-बात बलुआइत गेलै।
मीत यौ,
बाते-बात बलुआइत गेलै।
सूखल पोखरिक...।

१४. श्रोता कहि...

श्रोता कहि-कहि सुत-सुता
सुरता सुरत रूप बनौलक।
नैन नीन निनिया-निनिया
वाण चालिक बैन धड़ौलक।
वाण चालिक बैन धड़ौलक।

जेहेन बन चलियो तेहेन
वाणि चालि जिनगी पकड़ौलक।
पकड़ि चालि चल चलिया
आंकर पाथर संग सजौलक।
आंकर पाथर संग सजौलक।
श्रोता कहि...।

आंकर अँकुर पथ पथरा
भूमि निरभूमि भँजियौलक।
रौदिया रौद पानि पनिया
जड़िया जड़ि-जड़ि जाड़ जड़ौलक।
जड़िया जड़ि-जड़ि जाड़ जड़ौलक।
श्रोता कहि...।

काँच माटि कुंभ जहिना
चक चकिया चाक चरहौलक।
तरे-ऊपरे मूठ मुठिया
पत पता पात पतियौलक।
पत पता पात पतियौलक।
श्रोता कहि...।

१५. **जड़ि जंजालक...**

जड़ि जंजालक फेड़मे
टूटि विचार बदलाइत गेल
सुखा-सुखा, अलिसा-अलिसा
माँड़ मारि मरियाइत गेल।
माँड़ मारि मरियाइत गेल।

मारिते माड़ी नैन-बैन
सुरता सरुप झँपाइत गेल।
नीक, की नीक, अध की अधला
फेड़-कनफेड़ फेड़ाइत गेल।
फेड़-कनफेड़ फेड़ाइत गेल।
जड़ि जंजालक...।

फड़िते कनफेड़ मन बदलि
मुँगबा मारि मराइत गेल।
मने-मने मनुआँ पकड़ि
लेऊँच होइत लुटाइत गेल।
लेऊँच होइत लुटाइत गेल।
जड़ि जंजालक...।

फेड़-फेड़ कनफेड़ पेब
मरमराइत मन मराइत गेल।
नैन विचार कन-कनक मन
फीड़ा-फीड़ा फीड़ाइत गेल।
फीड़ा-फीड़ा फीड़ाइत गेल।
जड़ि जंजालक...।

१६. उगिते लाज...

उगिते लाज-विचार मनमे
कल-कल विवेक कलियाए लगै छै।
रभसि रंग गुण गण गमकि
धरती-अकास छिछियाए लगै छै।
धरती-अकास छिछियाए लगै छै।

सजि पात पंतियाए-पंतियाए
बिरिछ बाट बटियाए लगै छै।
अन्ना-गाहिंस फूल-फड़ सन
संगोरि संगोर बाचि कहै छै।
संगोरि संगोर बाचि कहै छै।
उगिते लाज...।

जगिते बीज बिचड़ि-बिचड़ि
दूसन-भूसन साजि सजबै छै।
सजैत सेज सहटि-सहटि
बन विवेक बुध बीच बिचरै छै।
बन विवेक बुध बीच बिचरै छै।
उगिते लाज...।

पुरुष विहिन नारी जेना
बीधब धरम धारणा धड़ै छै।
बिनु विवेक बुधियो तहिना
राँड़ संग मसोमात कहै छै।
राँड़ संग मसोमात कहै छै।
उगिते लाज...।

१७. ओन्हा चालि...

ओन्हा चालि पकड़ि-पकड़ि
अन्हुआ बात बजैत एलिऐ।
ओन्ह-ओन्ह बीच बिचड़ि
ओन्हु-ओन्हु कहैत एलिऐ।
ओन्हु-ओन्हु कहैत एलिऐ।

घाट-बाट ठेकान कोन
धड़-धड़ घर-घर कहैत एलिऐ।
बीन बोल सुनि नाग जेना
छिछलि-छिछलि नचैत एलिऐ।
ओन्हा चालि...।

घाटे-घाट बाटे-बाट
रतिया दिन कहैत एलिऐ।
रीतिया रीत रति रीता
राहगीर राह रहैत एलिऐ।
ओन्हा चालि...।

जे भूमि जोगी जनाबए
भूमि मिथिला कहैत एलिऐ।
भोगी भोग लागि लपटा
निसिचर लंका भखैत एलिऐ।
ओन्हा चालि...।

१८. गिरैत घर...

गिरैत घर जँ निमून गाए
साहस कऽ सुरक्षित निकालि सकिऐ
कदम-कदम उठि उठा कदम
साहस काज अदम कहा सकिऐ।
साहस काज अदम कहा सकिऐ।

अदम काज करै खातिर
अदम साहस जँ बटरि सकिऐ।
अदम इजोतक अदम रश्मि
अदमा ज्योति जोतिया सकिऐ।
अदमा ज्योति जोतिया सकिऐ।
गिरैत घर...।

अदम ज्योति केर अदम हीर
हीर-हीर धीर धड़िया सकिऐ।
हीर-हीर धीर धड़ि पकड़ि
हीर-हीर सीर सरिया सकिऐ।
हीर-हीर सीर सरिया सकिऐ।
गिरैत घर...।

हीर-हीर सीर सिर पकड़ि
कूदि धार अगम कुदिया सकिऐ।
वेग पकड़ि वेग वाणकँ
अगम धार बीच बचिया सकिऐ।
अगम धार बीच बचिया सकिऐ।
गिरैत घर...।

१९. अना गाहिंस...

अना-गाहिंस घर खसै छै।
मीत यौ, अना-गाहिंस घर खसै छै।
केतौ बाढ़ि तँ केतौ झाँट
लगि-लगि आगि केतौ खसै छै।
मीत यौ,
लगि-लगि आगि केतौ खसै छै।

बढ़ि बाढ़ि बढ़िया-बढ़िया
धड़-धड़, घर-घर पेबै छै।
पैस सीर-सीरा आगू
मने-मन मोइन फोड़ै छै।
मने-मन मोइन फोड़ै छै।
अना गाहिंस...।

झटिया झाँट पछड़ि-पछड़ि
सीक आँखि सिकिया खसै छै।
हारल मन मारल बिहारि
खुशिया घर खिसिया खसै छै।
खुशिया घर खिसिया खसै छै।
अना गाहिंस...।

लगि-लगि आगि हब हवा पेब
जने-जन मने मन जरै छै।
आगि पेब अगिया-अगिया
तन-मन धन धाम खसै छै।
तन-मन धन धाम खसै छै।
अना गाहिंस...।

२०. सूखल पोखरिक...

सूखल पोखरिक माइट जेना
गुन-गुना धड़-धड़ा कहै छै।
जल-जलाइत पट-पटाइत
अलप राग अलापि कहै छै।
अलप राग अलापि कहै छै।

केतबो रौद-बसात औत
कहियो किछु ने कहि सकै छै।
मुदा, माटि मटिया मटिया-मटिया
डाहि रौद रदिया कहै छै।
डाहि रौद रदिया कहै छै।
सूखल पोखरिक...।

मेट गेल सरवर-सुरसरि
हारि मानि हरिआ कहै छै।
कंचन हरिअर पानि कहाँ
घास-फूस फुसिया कहै छै।
घास-फूस फुसिया कहै छै।
सूखल पोखरिक...।

समुद्र जल अन-धन धरती
संग मिलि बतियाइत कहै छै।
भव-भूम समुद्र भव पैस
भवसागर असनान कहै छै।
भवसागर असनान कहै छै।
सूखल पोखरिक...।

२१. लत्ती जेना...

लत्ती जेना पानि पकड़ि
ठाढ़ गाछ कहबैत कहै छै।
जल कमल ठरकमल कहि-कहि
थलकमल रूप रूपैत एलैए।
थलकमल रूप रूपैत एलैए।

नाड़ पकड़ि कमल जहिना
असुअन आँखि धड़ैत एलैए।
असिया आस लागि लगा
बाइन लाज धड़बैत एलैए।
बाइन लाज धड़बैत एलैए।
लत्ती जेना...।

बाजि-बाजि बीज बनि बना
बोनझार छीटि छिटैत एलैए।
लाजबन्त लजबीजी कहि
फूल काँट सिरजैत एलैए।
फूल काँट सिरजैत एलैए।
लत्ती जेना...।

लत्ती आकि गाछ बिरिछ
फड़-फड़ फड़ियाइत एलैए।
कोनो गाछ फल बनि फूल
कोनो घौंदे घौंदियाइत एलैए।
कोनो घौंदे घौंदियाइत एलैए।
लत्ती जेना...।

२२. पानि माटि...

पानि-माटि ताबे नै पुछै
जाबे माटि सूखल रहै छै।
पबिते रस रसिक रसिया
संगी संग सिरजए लगै छै।
संगी संग सिरजए लगै छै।
पानि माटि...।

मील दुनू संकल्प ठानि
पौध पेड़ लगबए लगै छै।
सटि छाती छतिया-छतिया
सिरजन सीस देखए लगै छै।
सिरजन सीस देखए लगै छै।
पानि माटि...।

कोनो सीस अकास चढ़ि
कोनो धरती धड़ए लगै छै।
जोजन आठ हटलो रहने
हीर-हीर सटबए लगै छै।
हीर-हीर सटबए लगै छै।
पानि माटि...।

पेब प्रेम प्रेमी पकड़ि
धरती-अकास बरिसए लगै छै।
धारी धरती पकड़ि-पकड़ि
भूमि मातृ कहबए लगै छै।
भूमि मातृ कहबए लगै छै।
पानि माटि...।

२३. गोहि बनि...

गोहि बनि गोरिया गेलौं
मीत यौ, बनि गोहि गोरिया गेलौं

उतरि गेल सभ पानि देहक
पानिए-पानि गोरिया गेलौं।
तीनकोनमा मुँह बनि-बना
खोलैये बेर हेरा गेलौं।
खोलैये बेर हरा गेलौं।
गोहि बनि...।

पेबिते खाधि मन मनिया
खधे-खाधि मोनिया गेलौं
पनिया पग पकड़ि-पकड़ि
पनिया गोहि कहबए लगलौं।
पनिया गोहि कहबए लगलौं।
गोहि...।

माटि गोहि मोहि मोहिया
मोहिये मोहि मोहिया गेलौं
दालिये संग पातो महा
कुट्टी-कुट्टी कटा गेलौं।
कुट्टी-कुट्टी कटा गेलौं।
मोहि बनि...।

तँए शिकारी सिकड़ि छोड़ि
पानि पैसि पखिना पकड़लौं
पानि बीच पनिया-पनिया
अकास हवा बहैत देखलौं।
अकास हवा बहैत देखलौं।
गोहि बनि...।

२४. जेहन जे...

जेहेन जे मौसम अबैत
सएह ने प्रकृत पकड़ै छै।
कोनो हरिअर कचोर करि
तँ कोनो झड़पात बनबै छै।
तँ कोनो झड़पात बनबै छै।
जेहेन जे...।

जेहन जे प्रकृत अरजि
तेहने ने मनुखतो पबै छै।
समए पाबि जहिना कलशै
तहिना उजहि-उपटि जाइ छै।
तहिना उजहि-उपटि जाइ छै।
जेहेन जे...।

एक प्रकृत दुनियाँ रचबे
दोसर निरमान मनुख करै छै।
जेहन जे संगी प्रकृति
तेहने जशो-सुजश पबै छै।
तेहने जशो-सुजश पबै छै।
जेहन जे...।

कननी-मननी आबि-आबि
कननी जड़ि कोरियबै लगै छै।
जड़ि-जाड़ उतरिते उतरि
बिमल मन बिलमैत कहै छै।
बिमल मन बिलमैत कहै छै।
जेहन जे...।

२५. चेत चेता...

होरी होड़ हूड-हूडा
चेत चेता गाबए लगै छै।
जाड़क जड़ाएल वसन्त
उमैस भाव पाबए लगै छै।
उमैस भाव पाबए लगै छै।
चेत चेता...।

अन्हर-बिहाड़ि पग पकड़ि
गछिया गाछ गछाड़ए लगै छै।
सुख सुखा संग सुखाएल
टूक तोड़ि खसबए लगै छै।
टूक तोड़ि खसबए लगै छै।
चेत चेता...।

पबिते भाव चेत वसन्त
बड़ चेता गाबए लगै छै।
चौमासा, छौमासा संग
बारहो मास गाबए लगै छै।
बरहमासा गाबए लगै छै।
चेत चेता...।

फगुआ रंग रंगि-रंगि
आल-गुलाल उड़बए लगै छै।
डम्फा-ढोल बाजा-बजा
गीत जोगिरा गाबए लगै छै।
गीत जोगिरा गाबए लगै छै।
चेत चेता...।

२६. अन्हर जाल...

अन्हर जाल अन्हरजाली बनि
घाट अन्हार पसरए लगै छै।
अन्हरोखे जल जाल पसरि
अन्हेर अन्है करए लगै छै।
अन्हेर अन्है करए लगै छै।
अन्हर जाल...।

लोभी लोभ लोभ कौखनो
दोहरा-तेहरा चाप चपै छै।
उगिते लुत्ती लपकि-लपकि
बीच धरती रग्ड़ए लगै छै।
धरती बीच रग्ड़ए लगै छै।
अन्हर जाल...।

अनहा-कनहा कहि कहा-सूना
राति-दीन सुनबैत रहै छै।
ने पनिया माछ ने भूधर
उला-पका चीबबैत रहै छै।
उला-पका चीबबैत रहै छै।
घाट अन्हार...।

सभ दिन एलहे कहै छै।
सभ दिन गेलहे कहै छै।
सब दीन भेलहे कहै छै।
लेलहा-देलहा कंठ मोकि
बेथा-कथा सुनबैत रहै छै।
बेथा-कथा सुनबैत रहै छै।
अन्हर जाल...।

२७. डायरीक....

डायरीक जरूरी ओकरा
अनधुन जिनगी जेकर।
बान्हल खुट्टा गाए जेना
कि करत डायरी तेकर।
कि करत डायरी तेकर।
डायरीक...।

डायरीक तँ एक्के उदेस
तिथि-मिति तारीक तेकर
पल-मिनट सेकेण्ड तेकरा
घट-घट घटना जेकर।
घट-घट घटना जेकर।
डायरीक...।

पल पलिया पलि पला
सालक साल औरुदा जेकर।
मानि गेलौं बीस बरिस
समए-साल ससरत तेकर।
समए-साल ससरत तेकर।
डायरीक...।

घर-घर घंटी बान्हि-बान्हि
घट-घट घंटी तेकर।
घाँटी-घंटी घटि घटनि
औरुदा पाबै तेकर।
औरुदा पाबै तेकर।
डायरीक...।

२८. बरहबटू...

बरहबटू समाज बनि-बनि
बरहबटू समाज बनल छै।
ने बाट ने ठेकान लोक
बेठेकान समाज बनल छै।
बेठेकान समाज बनल छै।
बरहबटू...।

बिन ठेकानल बाट जेना
थहि-थहि थाहि-थाहि चलै छै।
तहिना ने समाजो समैत
गुरकुनियाँ मारि चलै छै।
गुरकुनियाँ मारि चलै छै।
बरहबटू...।

रेहे-रेह बोली वाणिक
मौला मन मरि-मरि मरै छै।
समए पाबि जहिना पतफूल
हहरि-हहरि हीर छोड़ै छै।
हहरि-हहरि हीर छोड़ै छै।
बरहबटू...।

मने नहि तँ बाइन बोल की
मन-मरदन मरदैत रहै छै।
जहिना बरहबटू समाज समैत
तहिना समाजो समवैत रहै छै।
तहिना समाजो समवैत रहै छै।
बरहबटू...।

२९. चोटी छुबए...

चोटी छुबै जखनि चट-चटिया
चटिया चाट चटैत रहै छै।
जीनगानिक रंग रभससँ
सुर जिन्दादिली भरैत रहै छै।
सुर जिन्दादिली भरैत रहै छै।
चोटी छुबए...।

बून-बून अकास बनि-बनि
धड़-धरती छुबैत रहै छै।
चूह चुहुटि साटि सटि छाती
दूध-फूल बनबए लगै छै।
दूध-फूल बनबए लगै छै।
चोटी छुबए...।

करम-धरम खेल सिर सिरजै
नचनी नाच नचैत रहै छै।
बाट-बटोही पकड़ि-पकड़ि
मूंगबा मुँह बिलहैत रहै छै।
मूंगबा मुँह बिलहैत रहै छै।
चोटी छुबए...।

मुँह जखने मूंगबा पड़तै
मधु मन मधुराइत रहै छै।
पाबि-पाँखि माछी पकड़ि
रस मधु बिलहए लगै छै।
रस मधु बिलहए लगै छै।
चोटी छुबए...।

३०. खेल-खेलाड़ी...

खेल खेलाड़ी खेल ठानि
कबडी दौड़ दौड़ैत एलैए।
सीमा बान्हि भौक भौकिया
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी...।

नमगर-चौड़गर परती पराँत
नमहर डेग डेगैत एलैए।
आम छी, जाम छी, करिया लताम छी
साँस छोड़ि रेड़ैत एलैए।
साँस छोड़ि रेड़ैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी...।

एक साँस चेत कबड्डी
चीका-दरबर करैत एलैए।
भौक बनि भोकिया-भोकिया
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी...।

धरती खुनि-खुनि मुदा एहनो
अखड़ाहा बनबैत एलैए।
माटि संग हाथ मिल-मिला
वीर भूमि सिरजैत एलैए।
वीर भूमि सिरजैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी...।

३१. ककोड़बा...

ककोड़बा बिआन ककोड़बे खाइ छै।
मीत यौ, ककोड़बा बिआन ककोड़बे खाइ छै।

बिनु सिर-पएर सजि-सजि
चुट्टा-चांगुर चुहुटए लगै छै।
अपने सिरजल-जल्ला-झल्ला
खद-खुद डिरिआए लगै छै।
खद-खुद डिरिआए लगै छै।
ककोड़बा...।

खखैर-खखोड़ि खखरी बनि
दन-दनाइत कहैत रहै छै।
माटि-पानि सभ हमरे-हमरे
कुम्हरा ढेर बनबैत रहै छै।
मीत यौ, कुम्हरा ढेर बनबैत रहै छै।
ककोड़बा...।

जेर निकलि जड़िया-जेड़िया
पाछू पेट छिछियाए लगै छै।
केतए जाएब केतए जाइ छी
ठेकानो कहाँ रहि पाबै छै।
मीत यौ, ठेकानो कहाँ रहि पाबै छै।
ककोड़बा...।

३२. सोर बनि...

सोर बनि सन्हिया सान्हि
सिर चालि चलए लगै छै।
सिर-सिरा सिरसिरा चुहटि
बत-बता बतबए लगै छै।
बत-बता बतबए लगै छै।
सोर बनि...।

फुलहरि फूल फड़ फलहरि
बड़गद विरीछ बनए लगै छै।
कट्ठा-कहि नट्ठा बनि-बना
सघन-घन बन धड़ए लगै छै।
घन सघन बन धड़ए लगै छै।
सोर बनि...।

पकड़ि मूस मुँह मुसका
शील-सिनेह सिरजए लगै छै।
पकड़ि पूछ पुछड़ी पकड़ि
घाट-घट घटियबए लगै छै।
घाट-घट घटियबए लगै छै।
सोर बनि...।

कूट चित्र घट-घट घटा
पौरुष-पुरुष गढ़ै लगै छै।
कूट कुटि कूटि पीस केर
सिर शिखरणी गढ़ए लगै छै।
सिर शिखरणी गढ़ए लगै छै।
सोर बनि...।

३३. सेज-सिंगार...

सेज सिंगार सजि साजि-साजि
साध सत् धड़ए लगै छै।
दूर-दूर दुरगम दृग दृश्य
सोलह सोर करए लगै छै।
सोरह सोर करए लगै छै।
सेज-सिंगार...।

बनिते दहाइ एकाइ बदैल
सजि फूल सिंगार धड़ै छै।
बाल-भाल लीख-लीख लला
धार जिनगी कुदए लगै छै।
जिनगी धार बहए लगै छै।
जिनगी धार बहए लगै छै।
सेज-सिंगार...।

सोर पकड़ि शोर सोर शोर
सोड़ह सोरहा करए लगै छै।
जिनगीक टपान टपिते टपैत
दोहरी सेज सजए लगै छै।
दोहरी सेज सजए लगै छै।
सेज-सिंगार...।

बदला-बदली करए धन-धेनु
धाम-काम कहबए लगै छै।
मिथि मालिन मन मलि-मलि
मिथिलांगना कहबए लगै छै।
मिथिलांगना कहबए लगै छै।
सेज-सिंगार...।

३४. जएह लूड़ि...

जएह लूड़ि-बुधि मन पकड़ए
तेहने टा जिनगी भाय यौ।
नगर नजरि निहारि-निहारि
अराधि राखि जिनगी भाय यौ।
अराधि राखि जिनगी भाय यौ।
जएह लूड़ि...।

लूड़ि-बुधि गरजोड़ बनि-बनि
गरदनि-खूटा मिलैत रहै छै।
एक रक्षक एक भक्षक बनि
अमृत रस भरैत रहै छै।
अमृत रस भरैत रहै छै।

रंग-रंग फूल माला मालिन
मुसुकि मुँह कली कलिआइ छै।
मालिन माला गढ़ि-मढ़ि
छत माली छतिया सजै छै।
छत माली छतिया सजै छै।
जएह लूड़ि...।

३५. जोति हर...

जोति हर हरबाह हकड़ि
जिनगीक गीत गबै छै।
ले-ऊँच, ऊँच ले बनि वन
चोटी-ढाल बनबै छै।
गे भौजी, चोटी-ढाल बनबै छै।
जोति हर...।

बून पपीह स्वाती पकड़ि
रस अमृत भरैत चलै छै।
कृत्ति-वृत्त परकृति पकड़ि
तरे-ऊपरे सिर सजै छै।
गे भौजी, तरे-ऊपरे सिर सजै छै।
जोति हर...।

लत्ती बनि लतड़ि-पसरि
लतमरदन करैत रहै छै।
चोटी जल टघड़ि-टघड़ि
खून पसीना एक करै छै।
गे भौजी, खून पसीना एक करै छै।
जोति हर...।

ओहए पानि टघड़ि-टघड़ि
झील-सरोवर सेहो सजै छै।
बाल-भाल कुशक कलेप
मरू स्थल गढ़ैत रहै छै।
गे भौजी, मरू स्थल गढ़ैत रहै छै।
जोति हर...।

३६. हर हलक...

हर हलक हलन्तमे
मीर-दोल तेहल बनै छै।
पुर-पुष्कर पुरस्सर
बाट-घाट घटबी चलै छै।
बाट-घाट घटबी चलै छै।
हल-हलक...।

एक-दू-तीन चारि रहितो
गति इंजीन गाड़ी धड़ै छै।
बेहिसाब-हिसाब बनि बनि
धड़ि धड़कि धड़ैत रहै छै।
धड़ि धड़कि धड़ैत रहै छै।
हर हलक...।

लंक-अयोधिया सटि-हटि
संगी-संग चलैत रहै छै।
निरखि परखि बाट-बटोही
फल करनी भोगैत रहै छै।
फल करनी भोगैत रहै छै।
हर हलक...।

३७. हिम-गिरि...

हिम-गिरि उत् उतूंग उमड़ि
निरमल अमृत धार बहै छै।
सिख-शिखर सिहैर-सहैर
गंग अकास बहैत रहै छै।
गंग अकास बहैत रहै छै।
हिम-गिरि...।

उतरे-दछिने धड़ैन धार
शिखर-सगर देखबै छै।
रंग-रंग फूल माल सजि
मन गंग साजि सजै छै।
मन गंग साजि सजै छै।
हिम-गिरि...।

हटि-सटि, सटि-हटि बैस-वेस
सागर-शिखर धड़ैत रहै छै।
गंग-अकास उतरि-उतरि
शिखर सगर पकड़ैत रहै छै।
शिखर सगर पकड़ैत रहै छै।
हिम-गिरि...।

३८. भुवन भूचलि...

भुवन भूचलि अकास
रंग-रंग तारा सजै छै।
तीन मिलि डंड तराजू
सभक तौल तोलैत रहै छै।
सभक तौल तोलैत रहै छै।
भुवन भूचलि...।

कखनो दायाँ वायाँ कखनो
कीर-किरदानी करैत रहै छै।
तेकठीक आस बिनु पौने
उदय-अस्त करैत रहै छै।
उदय-अस्त करैत रहै छै।
भुवन भूचलि...।

सातो सगर देखि सतभैंया
कचबच बचकच करैत रहै छै।
भोर होइत भहड़ि-भड़ड़ि
थकथका थकथका सेज सजै छै।
थकथका थकथका सेज सजै छै।
भुवन भूचलि...।

३९. खुजिते आँखि...

खुजिते आँखि तड़पि तड़पि
पृथिवी पग पएर पड़ै छै।
धरती-अकास बीचो-बीच
खम्भ भेल देखैत रहै छी।
खम्भ भेल देखैत रहै छी।
पृथिवी पग...।

अकास अमरीत बसि बरसि
खोंइछ धरती भरैत रहै छै।
आशा-आशी आस जगोने
बरहमासा गबैत चलै छै।
भाय यौ, बरहमासा गबैत चलै छै।
पृथिवी पग...।

पर-वत बत-पर संग-संग
हेल समुद्र हेलैत रहै छै।
बालु ऊपर ढेर बाइन बना
ढुइस हेल हेलैत रहै छै।
मीत यौ, अहींकेँ कहै छै
ढुइस हेल हेलैत रहै छै।
पृथिवी पग...।

जगरनाथ गेनिहार जानथि
समुद्र ढूसि चलैत रहै छै।
पीठ मुँह पाछू घुमा
ढूसि वेग पबैत रहै छै।
ढूसि वेग पबैत रहै छै।
पृथिवी पग...।

४०. मुड़जन मनुहर...

मुड़जन मनुहर पकड़ि-पकड़ि
तान विरूदावली तनै छै।
दोहन-दौजी कूदि-चमैक
रचि-रचि रास रचै-बसै छै।
संगी, रचि-रचि रास रचै-बसै छै।
मुड़जन मनुहर...।

मुसुक मुसकी मसकि-मसकि
कन-आनन अनैत रहै छै।
नेंगरा-लुलहा, जरल-मरल
बेणु-वन वीणा वाणि धड़ै छै।
संगी, बेणु-वन वाणि धड़ै छै।
मुड़जन मनुहर...।

शूर-सूर, मूड़ मुड़ि-मूड़ि
पग-प्रेम पबैत रहै छै।
लट्टा-चूड़ा, खट्टा दही
भोज ब्रह्म गबैत कहै छै।
संगी, भोज ब्रह्म गबैत कहै छै।
मुड़जन मनुहर...।

४१. गोधूलि-बेल...

गोधूलि-बेल डगर डगरि
थन-माइक थुथुन थुथबै छै।
आस सूर्ज असतन पेब
तर-ऊपर चमकए लगै छै।
तर-ऊपर चमकए लगै छै।
गोधूलि-बेल...।

करुआ काल अबैत देख
पग-पगहा पाछू घीचै छै।
पाँचम पहर पहल पहीर
रग-रग रंग रगड़ए लगै छै।
दीब साँझक दिव्य पाबि
सगुनियाँ कहबए लगै छै।
सगुनियाँ कहबए लगै छै।
गोधूलि-बेल...।

राति दबा दबदबाइत प्रभा
भोर-भुरुकबा जगए लगै छै।
दुर-दुरा, दुर-दुरा दूरा
प्रात सूर्ज घीचने अबै छै।
प्रात सूर्ज घीचने अबै छै।
गोधूलि-बेल...।

४२. दौड़ि-दौड़...

दौड़ि-दौड़ दउर घोर-घन
तैयो ने बाट भेटै छै।
कारी भार भारी करि-करि
अन्हरोख घाट बनबै छै।
अन्हरोख घाट बनबै छै।
दौड़ि-दौड़...।

अन्हार घर साँपे-साँप
विसबिसाह बनबैत कहै छै।
इजोतो अनरोख भऽ भऽ
घोरि अन्हार सघन करै छै।
घोरि अन्हार सघन करै छै।
दौड़ि-दौड़...।

लीला बड़ लीलाधर बड़-बड़
राशि-राशि रास रचै-बसै छै।
उनमत मन मत मता-मता
चालि मस्ती धड़ैत कहै छै।
चालि मस्ती धड़ैत कहै छै।
दौड़ि-दौड़...।

४३. चोट-चाट...

चोट-चाट चोटिया देलकै
मुँह-नाक भसका देलकै।
मुँह-नाक भसका देलकै।
मुँह-नाक...।

कान कनक छीनि-वीनि
बौक बहीर बौक बना देलकै।
नाक-मुँह-कान ताकि
चोट-चाट चोटिया देलकै।
मीत यौ, चोट-चाट चोटिया देलकै।
मुँह-नाक...।

बहीर-बौक मिलि-मिलि
मलि आँखि मसका देलकै।
गन्ह महक महक गन्ह
दिन-राति गनहा देलकै।
मीत यौ, दिन-राति गनहा देलकै।
मुँह-नाक...।

साँझ बेला वेली फूलि
भोर-भुरुकबा कहए लगै छै।
रतुका पार खेप खापि
दीनका चालि धड़बै छै।
यौ मीत, दीनका चालि धड़बै छै।
मुँह-नाक.....।

४४. चाइन चेन...

चाइन चेन थर-थीर थितिते
चान-मुँह मुस्की भरए लगै छै।
हास-परिहास अट्टाहास
लोक सूर्ज पहुँचए लगै छै।
सूर्ज लोक पहुँचए लगै छै।
चाइन चेन...।

तन-तना तक ताकि तरेगन
हिया-हिया देखैत रहै छै।
रंग एक रोशनाइ अनेक
लालटेन राति गढ़ैत रहै छै।
मीत यौ, लालटेन राति गढ़ैत रहै छै।
चाइन चेन...।

असिते-अस्त सुधा ज्योति
साँझ पहिल अनघोल करै छै।
बनि सगुनियाँ तार-तारा
आगूक दम्भ भरैत रहै छै।
मीत यौ, आगूक दम्भ भरैत रहै छै।
चाइन चेन...।

४५. दीनक दोख...

दीनक दोख कहै छी हे बहिना
दीनक दोख कहै छी।
बात-बात बतिया कतिया
हटि-हटि हाट हटै छी।
बत-रग्गर रगड़ि-रगड़ि
पीसि पीस पीबै छी।
हे बहिना, पीसि पीस पीबै छी।
दीनक दोख...।

घरे-अंगने बीज कोढ़ीक
छीटि-गाड़ि रोपाइत रहै छी।
फूल कोढ़ीक फलक तेहने
जिनगी पाठ पढ़ैत रहै छी।
हे बहिना, जिनगी पाठ पढ़ैत रहै छी।
दीनक दोख...।

निसाँ पीब नस-नस नसिया
निसाँएल घाट तकैत रहै छी।
रातिक हारल दिनक मारल
जिनगी गीत गबैत रहै छी।
हे बहिना, जिनगी गीत गबैत रहै छी।
दीनक दोख...।

४६. सगर समनदर...

सगर समनदर सड़ि सरित
तन-मन आस सिरजै छै।
दुर्गा देवी हे माँ काली
असतन आस धड़बै छै।
मीत यौ, असतन आस धड़बै छै।
सगर समनदर...।

थन तन मन पशु धन
परबत सीस सजबै छै।
ढेर धार ढेरिआएल घाट
मन मनु माँ कहबै छै।
मीत यौ, मन मनु माँ कहबै छै।
सगर समनदर...।

पाश बैसि बसिया बुलकि
जिनगी तानि नचै छै।
हे माँ, नगर बीच रीति-रीत
सती-सावित्री पुछै छै।
मीत यौ, सन्त सावित्री पुछै छै।
सगर समनदर...।

४७. चप-चप...

चप-चप चपचपा चपा
चपचपाइत चाप चपा गेलिऐ।
धार पेट चप-चपीमे
तकिते ताकि तरिया गेलिऐ।
मीत यौ, तकिते ताकि तरिया गेलिऐ।
चपचपाइत चाप...।

चपचपाइत मन धकधकाइत तन
काप कपैत कतिया गेलिऐ।
ओलनि-छोलनि घर जहिना
भीत्ता धार भितिया गेलिऐ।
मीत यौ, भीत्ता धार भितिया गेलिऐ।
चपचपाइत चाप...।

उठिते पूरबा पच्छिम चलि
पछिया पूब चलिया गेलिऐ।
चप-चप चपचपा चपा
खस्सिया खर्ग टंगा गेलिऐ।
मीत यौ, खस्सिया खर्ग टंगा गेलिऐ।
चपचपाइत चाप...।

४८. संगे-संग...

घरक नाओं संगे गड़ा गेल
मीत यौ, ई गड़बड़ भेल उ गड़बड़ भेल?
नै यौ, हँ यौ, हँ यौ, नै यौ, हँ....।
ई गड़बड़ भेल, उ गड़बड़ भेल।
घरक नाओं...।

अदैल नीक बदैल अधला
अदलि-बदलि बदला गेल।
गारा गर पकड़ि पकड़, मीत
गारा घेघ बनबैत गेल।
मीत यौ, गारा घेघ बनबैत गेल
घरक नाओं...।

बाम दहिन बिनु बुझने-सुझने
छटि बाम बूच छटिया गेल।
डाली कसतारा सजि सजा
ई अधला भेल, मीत यौ ई अधला भेल।
ई अधला भेल, मीत यौ ई अधला भेल।
घरक नाओं...।

नोन खा सरियत चुकाबै
पटिया पाठ पढ़ैत गेल।
अनोन-मीठनोन बनाबै
मीठ-मीठा मीठिया गेल।
मीठ-मीठा मीठिया गेल।
घरक नाओं...।

४९. जिनगीक भव...

जिनगीक भव भँवरमे
अरबो दिन-दुनियाँ बसल छै।
अपन-अपन सीमा सहेजि
गर गड़ि सूर चान सजल छै।
जिनगीक भव...।

अपन-अपन अर्ज अरैज
मंडल अकार सकारि सजल छै।
उरजा उर्ज उरैज उरैज
आभा मंडल नाम धड़बै छै।
आभा मंडल नाम धड़बै छै।
जिनगीक भव...।

आभा परभा सहेजि सहेजि
प्रतिभा प्रभाव विलहै छै।
जहिना धड़-धड़ा धरती
तहिना ने चानो सूर्ज कहबै छै।
तहिना ने चानो सूर्ज कहबै छै।
जिनगीक भव...।

संगे-संग संगनी सने
संग मीलि गड़-जोर चलै छै।
बाँहि पकड़ि आभा प्रतिभा
आभामंडल चिकैड़ कहै छै।
आभामंडल चिकैड़ कहै छै।
जिनगीक भव...।